नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



७

यात्रा की तैयारी

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नज़ानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

यात्रा की तैयारी

अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





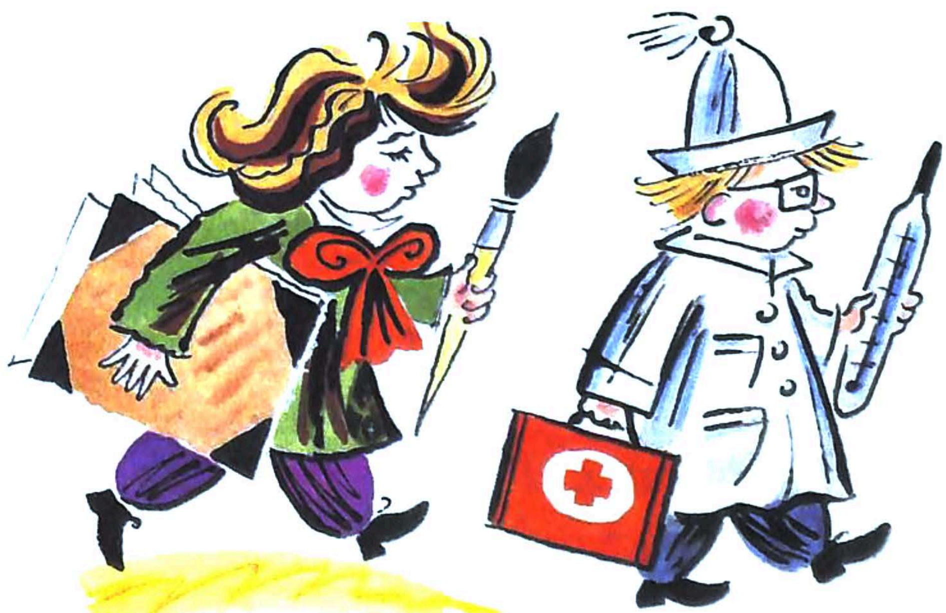
अगले दिन सुबह जानू ने अपने सभी दोस्तों को जल्दी उठा दिया। सब जागे और उठकर जाने की तैयारी करने लगे। मोड़ू और पेंचू ने अपनी चमड़े की जाकेट पहनीं। शिकारी गोलीबाज़ ने चमड़े के अपने सुंदर बूट पहने। इन बूटों का ऊपरी भाग घुटनों से ऊंचा था और ऊपर से बकसुए लगाये गये थे। ऐसे बूटों से यात्रा में बड़ा आराम मिलता है। जल्दबाज़ ने "बिजली" नामक अपना सूट पहना। इस सूट के बारे में विस्तार से बताना ज़रूरी है। जल्दबाज़ ने जो हमेशा हड़बड़ी में रहता था और उसे बेकार समय बर्बाद करना पसंद नहीं था, अपने लिए ख़ास सूट सोच निकाला था, जिसमें एक भी बटन नहीं था। सभी जानते हैं कि कपड़े पहनने और उतारने में सबसे ज़्यादा समय बटन बंद करने और खोलने में बर्बाद होता है। जल्दबाज़ के सूट में क़मीज़ और पैंट अलग-अलग नहीं थे: क़मीज़ और पैंट जम्पसूट की तरह एकसाथ जुड़े हुए थे। यह पूरा जम्पसूट गर्दन पर बस एक बटन से बंद होता था। इस बटन को खोलो तो पूरा सूट न जाने कैसे बिजली की तरह कंधों से फिसलकर पैरों पर गिर जाता था।



मोटे गुलगुला ने अपना सबसे अच्छा सूट पहना। उसके सूटों में जेबें सबसे ज़्यादा काम की होती थीं। जितनी ज़्यादा जेबें होती थीं, सूट उतना ही अच्छा माना जाता था। उसके सबसे अच्छे सूट में सत्रह जेबें थीं। जाकेट में दस जेबें थीं: दो जेबें सीने पर, दो तिरछी जेबें पेट पर, दो जेबें बग़ल में, तीन जेबें अंदर और एक चोर जेब पीठ पर। पैंट में दो जेबें आगे, दो पीछे, दो जेबें बग़ल में और एक जेब घुटने पर। आम तौर पर घुटनेवाली जेब के साथ सत्रह जेबोंवाले ऐसे सूट सिर्फ़ कैमरामैनों के पास होते हैं।

शरबतिया ने चारख़ानेदार सूट पहना था। वह हमेशा चारख़ानेदार सूट पहनकर घूमता था। उसकी पैंट भी चारख़ानेदार थी, कोट भी चारख़ानेदार और टोपी भी चारख़ानेदार थी। दूर से उसे देखकर बौने हमेशा कहते थे: "देखो, देखो, वह शतरंज का बोर्ड आ रहा है!" कदाचित् ठाठदार स्कीइंग सूट पहने था, जोकि यात्रा के लिए बहुत आरामदेह था।

शक्कू ने धारीदार मोटा स्वेटर पहन रखा था, और पैरों को धारीदार पट्टियों, और गर्दन को धारीदार मफ़लर से लपेट रखा था। इस पोशाक में वह पूरा धारीदार लग रहा था। दूर से देखने पर लगता था, जैसे वह शक्कू न हो, बल्कि एक धारीदार गद्दा हो। वैसे तो जो जैसे कपड़े पहन सकता था उसने पहन लिये, बस भुलक्कड़, जिसे हर जगह अपना सामान खोने की आदत थी, किसी भी तरह अपनी जाकेट नहीं ढूंढ पाया। उसने अपनी टोपी भी कहीं घुसेड़ दी थी और लाख ढूंढने पर भी वह कहीं







मिल न सकी। आख़िरकार पलंग के नीचे उसे अपना सर्दीवाला कनटोप मिल गया।

चित्रकार ट्यूबेश ने यह फ़ैसला किया कि जो कुछ यात्रा के समय देखेगा उस सबके चित्र बनायेगा। उसने अपने रंग और ब्रश लिये और उन्हें उड़न-गुब्बारे के झाबे में रख दिया। बाजाबाज़ ने अपने साथ बांसुरी ले चलने का फ़ैसला किया। डाक्टर टिकियावाला ने यात्रावाला दवाओं का डिब्बा अपने साथ ले लिया और उसे झाबे में बेंच के नीचे रख दिया। यह उनकी दूरदर्शिता थी, क्योंकि यात्रा के समय कोई भी बीमार हो सकता था।

अभी सुबह के छह भी नहीं बजे थे, पर चारों ओर लगभग पूरा शहर इकट्ठा हो गया था। बहुत से बौने जो उड़ान देखना चाहते थे, चारदीवारी पर, घरों की छतों पर बैठे थे।

जल्दबाज़ सबसे पहले झाबे में चढ़ा और उसने अपने लिए सबसे आराम की जगह चुन ली। उसके पीछे चढ़ा नजानू।

"देखो," चारों ओर इकट्ठे हुए लोग चिल्लाये, "ये लोग बैठ रहे हैं!"

"तुम लोग झाबे में क्यों चढ़ गये?" जानू ने कहा, "उतर आओ, अभी तो काफ़ी देर है।"

"देर क्यों? अभी से उड़ सकते हैं," नजानू ने उत्तर दिया।

"बड़े समझदार बनते हो! गुब्बारे में पहले गर्म हवा भरनी है।"



"गर्म हवा क्यों?" जल्दबाज़ ने पूछा।

"क्योंकि गर्म हवा ठंडी हवा से हल्की होती है और हमेशा ऊपर उठती है। जब हम गुब्बारे को गर्म हवा से भरेंगे, तो गर्म हवा ऊपर उठेगी और गुब्बारे को ऊपर की ओर खींचेगी," जानू ने समझाया।

"मतलब, अभी गर्म हवा चाहिये," नजानू बोला, और जल्दबाज़ के साथ झाबे से उतर आया।

"देखो," बग़लवाले घर की छत से कोई चिल्लाया, "उतर रहे हैं! उड़ने का विचार छोड़ दिया!"

"ज़रूर," दूसरी छत से किसी ने हामी भरी। "भला ऐसे गुब्बारे में कहीं उड़ा जा सकता है! बस, लोगों को पागल बना रहे हैं!"

तभी जानू ने बौनों से कुछ बोरों में रेत भरकर झाबे में रखने को कहा। जल्दबाज़, ख़ामोशू, कदाचित् और दूसरे छुटकों ने बोरों में रेत भरकर उन्हें झाबे में रखना शुरू कर दिया।

"यह क्या कर रहे हैं ये लोग?" हैरानी से देखनेवालों ने एक-दूसरे से पूछा, "रेत के बोरे झाबे में क्यों रख रहे हैं?"

"ऐ, तुम्हें रेत भरे बोरों की क्या ज़रूरत पड़ेगी?" बाड़ पर बैठा दलदलिया चिल्लाया।

"अभी हम ऊपर उड़ेंगे और वहां से तुम्हारे सिर पर फेंकेंगे," नजानू ने उत्तर दिया।



सच तो यह है कि नजानू को ख़ुद भी मालूम नहीं था कि बोरों की क्या ज़रूरत है। उसने यह सब अपने मन से गढ़ लिया था।

"तुम लोग पहले ऊपर तो उड़ो!" दलदलिया चिल्लाया।

बाड़ पर दलदलिया के पास बैठे छुटके भुनगा ने कहा:

"हो सकता है कि वे उड़ने से डर रहे हों और अपनी जगह रेत से भरे बोरों को उड़ाना चाहते हों।"

सभी हंस पड़े।

"ज़रूर डरते हैं! डर किस बात का है? ग़ुब्बारा तो उड़ेगा ही नहीं!"

"हो सकता है वह अभी उड़ेगा," छुटकियों में से एक ने कहा, जो चारदीवारी की दरार में से देख रही थीं।

अभी चारों तरफ़ बहस हो ही रही थी कि जानू ने आंगन के बीच में आग जलाने को कहा। सभी ने देखा कि मोड़ू और पेंचू ने अपने वर्कशाप से बड़ा तांबे का बर्तन निकाला और उसको आग पर रख दिया। यह बर्तन मोड़ू और पेंचू ने हवा गर्म करने के लिए बहुत पहले बनाया था। बर्तन मज़बूत ढक्कन से बंद था, जिसमें एक छेद था। उसकी बग़ल में लगे पम्प द्वारा बर्तन में हवा भर दी जाती थी। बर्तन में गर्म होकर वह छेद से ऊपर आ जाती थी।

वास्तव में तो देखनेवालों में से कोई समझ नहीं पाया कि बर्तन किसलिए है, पर हर एक अटकलें लगा रहा था।



"हो सकता है, अपने लिये शोरबा बनाने का फ़ैसला किया हो, कि यात्रा से पहले नाश्ता कर लें," एक छुटकी ने कहा, जिसका नाम बबूना था।

"और तुम क्या सोचते हो," भुनगा बोला, "तुम भी खाते अगर इतने लम्बे सफ़र पर जाते।"

"ज़रूर," बबूना ने हां में हां मिलायी। "हो सकता है, आख़िरी बार..."

"क्यों, आख़िरी बार क्यों?"

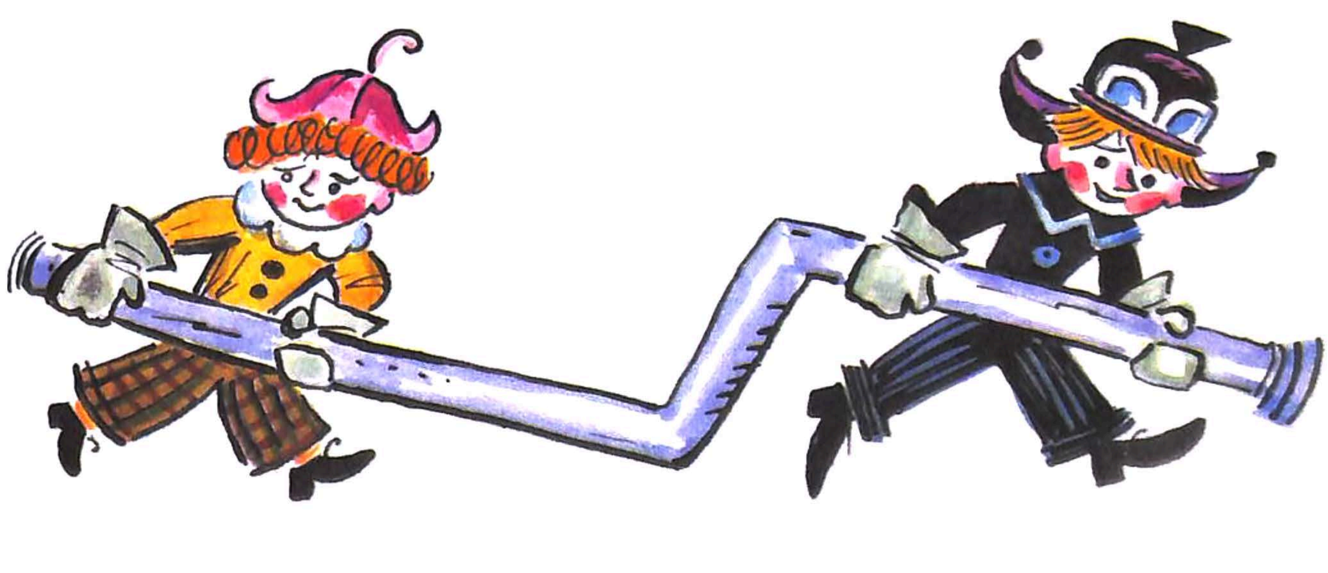
"आख़िरी बार खायेंगे, फिर उड़ेंगे, उड़न-गुब्बारा फट जायेगा और वे सब गिर जायेंगे।"

"डरो मत, फटेगा नहीं," दलदलिया ने उससे कहा। "फटने के लिये ज़रूरी है कि वह उड़े, लेकिन वह पूरे एक हफ़्ते से यहीं खड़ा है और कहीं भी नहीं उड़ रहा है।"

"देखो, अब उड़ेगा," बटन ने कहा जो मक्खी के साथ उड़ान देखने आई थी।

थोड़ी देर में सभी देखनेवालों में गर्मागर्म बहस होने लगी। कोई कहता कि गुब्बारा उड़ेगा, तभी दूसरा कहता नहीं उड़ेगा, और अगर कोई कहता कि नहीं उड़ेगा तो उसे तुरन्त उत्तर मिलता कि उड़ेगा ज़रूर। शोर इतना मच रहा था कि कुछ भी सुनायी नहीं दे रहा था। बहस में इतनी गर्मागर्मी पैदा हुई कि एक छत पर दो छुटके आपस में लड़ पड़े। बड़ी मुश्किल से दोनों को अलग अलग किया गया।

अब तक बर्तन में हवा काफ़ी गर्म हो चुकी थी और जानू ने फ़ैसला किया कि



गुब्बारे को गर्म हवा से भरना चाहिए। लेकिन गुब्बारे को गर्म हवा से भरने के लिए उसमें से ठंडी हवा निकालना ज़रूरी था। जानू ने गुब्बारे के पास आकर रबड़ की नली पर मज़बूती से बंधी हुई रस्सी को खोल दिया। ठंडी हवा तेज़ी से सनसनाहट के साथ गुब्बारे से निकलने लगी। जो बौने बहस कर रहे थे कि गुब्बारा उड़ेगा या नहीं, उन्होंने मुड़कर देखा कि गुब्बारा जल्दी-जल्दी छोटा होने लगा है। वह ढीला होकर सिकुड़ने लगा जैसे सूखी नाशपाती हो, और थोड़ी देर में झाबे की तली में ग़ायब हो गया। पहले जहां बहुत बड़ा गुब्बारा खड़ा था अब वहां बस जाली से ढंका हुआ झाबा रह गया था।

सनसनाहट बंद हुई और तभी सब का मिला-जूला ठहाका गूंज उठा। सभी हंसने लगे, वे भी जो कह रहे थे कि गुब्बारा उड़ेगा और वे भी जो कह रहे थे कि गुब्बारा नहीं उड़ेगा। नजानू का दोस्त चिथड़िया इतने ज़ोर से हंसा कि छत से नीचे गिर पड़ा और उसकी खोपड़ी के पीछे गूमड़ पड़ गया। डाक्टर टिकियावाला को तुरन्त मरहम-पट्टी करनी पड़ी और गूमड़ पर आयोडिन लगानी पड़ी।

"वाह, क्या ख़ूब उड़े!" चारों ओर खड़े लोग चिल्ला पड़े। "यह है जानू का गुब्बारा! हफ़्ते भर इसमें जुटे रहे और वह है कि फट गया। कैसी मज़े की बात है! ज़िंदगी में कभी इतना हंसने को नहीं मिला!"

पर जानू ने इस बार भी लोगों के हंसने पर ध्यान नहीं दिया। उसने गुब्बारे को बर्तन की लम्बी नली से जोड़ दिया और पम्प चलाने को कहा। बर्तन में साफ़ हवा



भरने लगी और गर्म हवा नली से होकर गुब्बारे में। देखते-देखते गुब्बारा जाली के नीचे से धीरे-धीरे फूलकर झाबे से बाहर निकल आया।

"देखो," आस-पास खड़े लोग हंसने लगे, "फिर हवा भर रहे हैं! कैसे लोग हैं! पर वह फिर फट जायेगा!"

किसी को विश्वास नहीं हुआ कि गुब्बारा उड़ेगा। और गुब्बारा इसी बीच बड़ा होता गया। झाबे से बाहर निकलकर वह उसके ऊपर जमकर बैठ गया, ठीक तश्तरी में रखे हुए बड़े तरबूज़ की तरह। तभी सभी ने देखा कि गुब्बारा जाली को खींचकर अपने आप धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा। सभी वाह-वाह करने लगे। सबने देखा कि अब किसी ने भी गुब्बारे को रस्सी से ऊपर नहीं खींचा।

"हुर्रा!" बबूना तालियां बजा-बजाकर चिल्लाने लगी।

"चिल्लाओ मत!" दलदलिया ने उसे डांटा।

"हां, अब तो उड़ने लगा!"

"अब भी नहीं उड़ा, वह झाबे से जुड़ा है। भला वह उठा पायेगा झाबे को और वह भी बौनों के साथ!"

तभी दलदलिया ने देखा कि गुब्बारा बड़ा होकर ऊपर उठ गया और झाबा भी ज़मीन से अलग हो गया। दलदलिया अपने आप को रोक न पाया और पूरे ज़ोर से चिल्ला पड़ा:

"पकड़ो! नहीं तो उड़ जायेगा! यह क्या कर रहे हो तुम लोग?"



पर गुब्बारा उड़ा नहीं क्योंकि झाबा अख़रोट के पेड़ से मज़बूती से बंधा हुआ था। वह तो बस ज़मीन से थोड़ा-सा ऊपर उठा था।

"हुर्रा-आ!" सभी ओर से आवाज़ें आयीं। "हुर्रा! शाबाश, जानू! यह है जानू का गुब्बारा! किस चीज़ से उसे भरा गया है? शायद भाप से।"

अब सभी को यक़ीन हो गया कि गुब्बारा उड़ेगा ज़रूर।





Н. Носов
ПОДГОТОВКА К ПУТЕШЕСТВИЮ
На языке хинди

N. Nosov
PREPARATIONS FOR A TRIP
in Hindi



सोवियत संघ में प्रकाशित





ISBN 5-05-0009829
ISBN 5-0[illegible]